फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 39)

Jumuaa Ko Eid Ho To Kaisa ? (Hindi)

जुमुआ़ को ईद हो तो कैसा ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

पेशकश :

(दा'वते इस्लामी)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई ﷺ के मदनी मुज़ाकरे नम्बर 32 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने नई तरतीब और नए कसीर मवाद के साथ तय्यार किया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**जुमुआ़ को ईद हो तो कैसा ?**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इ़ल्मो ह़िक्मत से मा'मूर मदनी मुज़ाकरात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** इन मदनी मुज़ाकरात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ालआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

26 रमज़ानुल मुबारक 1439 सि.हि./ 11 जून 2018 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

जुमुआ़ को ईद हो तो कैसा ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (35 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं फिर उस में न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और न ही उस के नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं क़ियामत के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइ़से ह़सरत होगी । (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) चाहे तो उन को अ़ज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईद और जुमुआ़ का इज्तिमाअ़ बाइ़से बरकत है

सुवाल : जुमुअ़तुल मुबारक के दिन ईद होने की सूरत में दो ख़ुत़्बे पढ़े जाते हैं एक ईद का और दूसरा जुमुअ़तुल मुबारक का तो क्या येह हुकूमत के लिये वबाल है ?

مدینہ

1 ..... ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی القوم یجلسون... الخ، ۵/۲۴۷، حدیث: ۳۳۹۱ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

जवाब : अ़वाम में येह बात मश्हूर है कि जुमुअ़तुल मुबारक के दिन ईद होने की सूरत में दो ख़ुत़्बे पढ़े जाते हैं इस से हुकूमत पर बोझ पड़ता है, शरीअ़ते मुत़ह्हरा में इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं। जुमुआ़ और ईद का दिन दोनों मुबारक हैं और इन का एक दिन में जम्अ़ हो जाना बरकत में इज़ाफ़े का बाइ़स है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक ज़माने में भी ईद और जुमुआ़ एक दिन जम्अ़ हुए हैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें मन्हूस नहीं जाना। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईदैन और जुमुआ़ की नमाज़ में ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى﴾ और ﴿هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ﴾ पढ़ते थे। जब ईद और जुमुआ़ एक दिन में जम्अ़ हो जाते तब भी येही दोनों सूरतें दोनों नमाज़ों में पढ़ते थे।(1)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि ईद और जुमुआ़ जम्अ़ हो जाएं तो नमाज़े ईद की वज्ह से नमाज़े जुमुआ़ मुआ़फ़ न हो जाएगी येह ब दस्तूर फ़र्ज़ रहेगी। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने जो अपने दौरे ख़िलाफ़त में नमाज़े ईद के बा'द फ़रमाया था कि जुमुआ़ की नमाज़ के लिये जो चाहे ठहरे जो चाहे चला जाए येह उन गाउं वालों से ख़ित़ाब था जिन पर न नमाज़े ईद वाजिब थी और न नमाज़े जुमुआ़ फ़र्ज़, बरकत के

مدینہ

1 ......مسلم، كتاب الجمعة، باب مايقرأ في صلاة الجمعة، ص٣٣٨، حديث:٢٠٢٨ دار الكتاب العربي بيروت

लिये ईद व जुमुआ़ पढ़ने शहर आ जाते थे, लिहाज़ा उन का फ़रमान इस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं । दूसरे येह कि ईद व जुमुआ़ का इज्तिमाअ़ मन्हूस नहीं जैसा कि आज कल जुहला ने समझ रखा है बल्कि इस में दो बरकतों का इज्तिमाअ़ है और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़माने में ऐसा हुवा है। तीसरे येह कि एक सूरत दो नमाज़ों में पढ़ना जाइज़ है। ख़याल रहे कि यहां भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अक्सरी अ़मल मुराद है दाइमी नहीं वरना आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से नमाज़े जुमुआ़ व ईदैन में और सूरतें पढ़ना भी साबित हैं।[1] लिहाज़ा ईद और जुमुअ़तुल मुबारक एक दिन में जम्अ़ हों तो इसे मन्हूस नहीं समझना चाहिये कि येह महूज़ बद शुगूनी[2] है और बद शुगूनी इस्लाम में मन्अ़ है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : जिस ने बद शुगूनी ली और जिस के लिये बद शुगूनी ली गई वोह हम में से नहीं है (या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं है) ।[3]

ओ़हदे या ज़िम्मादारी के लिये इन्तिख़ाब का मे'यार

सुवाल : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में किसी ओ़हदे या ज़िम्मादारी के लिये इन्तिख़ाब का मे'यार क्या है ?

مدینہ

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 2/55, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2 ..... बद शुगूनी से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 126 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बनाम "बद शुगूनी" ह़दिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात में इज़ाफ़ा होगा। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

3 ..... معجم کبیر، اسحاق بن الربیع ابو حمزۃ العطار، ۱۸/۱۶۲، حدیث: ۳۵۵ دار احیاء التراث العربی بیروت

जवाब : आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में किसी ओ़हदे या ज़िम्मादारी के लिये इन्तिख़ाब का मे'यार मदनी कामों में नुमायां कारकर्दगी, इल्मो अ़मल का पैकर और मुस्बत ज़ेह्न (positive mind) वाला होना है। मदनी काम न करने वाला अगर्चे ज़ाती हैसिय्यत में कितनी ही बड़ी शख़्सिय्यत का मालिक हो मगर उसे तन्ज़ीमी ओ़हदा नहीं दिया जाता। दा'वते इस्लामी की बक़ा इसी में है कि मदनी काम और हुस्ने अख़्लाक़ वग़ैरा को तरजीह़ दी जाए कि मदनी काम सदा बहार है जब कि कोई भी शख़्सिय्यत सदा बहार नहीं। अगर मदनी काम के बजाए किसी शख़्सिय्यत को फ़ौक़िय्यत दी जाए तो मदनी काम पसे पर्दा चला जाएगा और उस शख़्सिय्यत के इन्तिक़ाल के बा'द दा'वते इस्लामी का ज़वाल शुरूअ़ हो जाएगा और मैं नहीं चाहता कि दा'वते इस्लामी एक लम्ह़े के लिये भी ज़वाल पज़ीर हो, इसी वज्ह से मैं हमेशा मदनी काम को तरजीह़ देता हूं और अपने नाम के ना'रे लगाने से मन्अ़ करता रहता हूं। मैं ने दा'वते इस्लामी में शख़्सिय्यत बनने या बनाने के बजाए मर्कज़ी मजलिसे शूरा और दीगर मजालिस का निज़ाम क़ाइम किया है। अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा दिल मुत्मइन है कि अगर मुझे शहादत की सआ़दत मिल भी जाए तो मेरे बा'द भी दा'वते इस्लामी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ाइम रहेगी लिहाज़ा तमाम ज़िम्मादारान से भी मदनी इल्तिजा है कि शख़्सिय्यत बनने या बनाने के बजाए मदनी कामों को तरजीह़ दें कि इसी में इस्लाम व सुन्नियत का फ़ाएदा है।

शख़्सिय्यात को बदनाम करने की नाकाम कोशिशें

सुवाल : क्या शख़्सिय्यात पर भी इल्ज़ामात लगा कर उन्हें बदनाम करने की कोशिशें की जाती हैं ?

जवाब : जी हां ! शख़्सिय्यात पर इल्ज़ाम लगा कर उन्हें बदनाम करने की कोशिश करना हमेशा से दुश्मनों का वत़ीरा रहा है, मा व शुमा (या'नी हम और आप) किस गिनती में हैं ? अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام[1] पर भी बे बुन्याद इल्ज़ामात लगा कर مَعَاذَ اللهعَزَّوَجَلَّ उन्हें बदनाम करने की कोशिशें की गई हैं। चुनान्चे क़ारून ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से लोगों को बरगश्ता (या'नी मुख़ालिफ़) करने के लिये एक औ़रत को बहुत ज़ियादा मालो दौलत दे कर आमादा कर लिया कि مَعَاذَ الله वोह आप पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाए चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَاوَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वा'ज़ फ़रमाने के दौरान क़ारून ने आप को टोका कि फ़ुलानी औ़रत से आप ने बदकारी की है।

1..... सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नबी का मा'सूम होना ज़रूरी है और येह इस्मत नबी और मलक (या'नी फ़िरिश्तों) का ख़ास्सा है, कि नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं । इमामों को अम्बिया की त़रह़ मा'सूम समझना गुमराही व बद दीनी है। इस्मते अम्बिया के येह मा'ना हैं कि उन के लिये हिफ़्ज़े इलाही का वा'दा हो लिया, जिस के सबब उन से सुदूरे गुनाह शर्अ़न मुह़ाल है ब ख़िलाफ़ अइम्मा व अकाबिर औलिया, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें मह़फ़ूज़ रखता है, उन से गुनाह होता नहीं, मगर हो तो शर्अ़न मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) भी नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/38, हिस्सा : 1, मक्तबतुल मदीना)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि उस औ़रत को मेरे सामने लाओ चुनान्चे वोह औ़रत बुलाई गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ औ़रत ! सच सच बता कि वाक़िआ़ क्या है ? तो उस ने मज्मए़ आ़म में साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मुझ को क़ारून ने कसीर दौलत दे कर आप पर बोहतान लगाने के लिये आमादा किया है । उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आबदीदा हो कर सज्दए शुक्र में गिर पड़े और ब ह़ालते सज्दा आप ने येह दुआ़ मांगी कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! क़ारून पर अपना क़हरो ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू इस को पकड़ ले । तो क़ारून माल समेत ज़मीन में धंस गया ।[1]

इसी त़रह़ **बुख़ारी शरीफ़** में बनी इसराईल के एक वली ह़ज़रते सय्यिदुना जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वाक़िआ़ मज़्कूर है कि एक औ़रत उन की झोंपड़ी में आई और बदकारी के लिये ख़ुद को पेश किया मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने साफ़ इन्कार कर दिया । फिर उस औ़रत ने एक चरवाहे के पास जा कर मुंह काला किया और बच्चा पैदा होने पर इल्ज़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर लगा दिया । लोगों ने मुश्तइ़ल हो कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ूब ज़दो कोब किया (या'नी मारपीट

1 ..... تفسیر صاوی، پ۲۰، القصص، تحت الآیۃ: ۸۱، ۴/۱۵۴۷ ملخصاً مرکز الاولیا لاھور

www.dawateislami.net

की) और झोंपड़ी की भी ईंट से ईंट बजा दी। ह़ज़रते सय्यिदुना जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस नौ मौलूद बच्चे के पास आए और कहा : तेरा बाप कौन है ? तो बच्चे ने उस चरवाहे का नाम बताया। लोगों को जब ह़क़ीक़ते ह़ाल पता चली तो वोह बहुत शर्मसार हुए और अ़र्ज़ की : क्या हम आप की झोंपड़ी सोने की ईंटों से बना दें ? तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : नहीं बल्कि मिट्टी ही की बना दो।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि दुश्मन की त़रफ़ से बे बुन्याद इल्ज़ामात के ज़रीए़ भी बदनाम करने की कोशिश की जाती है लिहाज़ा कभी भी मेरे और मेरी दा'वते इस्लामी बल्कि किसी भी मुसल्मान के मुतअ़ल्लिक़ कोई ग़लत़ बात सुनें तो जब तक तह़क़ीक़ न कर लें उस वक़्त तक उस की तस्दीक़ न करें। **अल्लाह** पाक हम सब को ज़ालिमों के ज़ुल्म, शरीरों के शर और ह़ासिदीन के ह़सद से मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शख़्सिय्यात की अहम्मिय्यत

सुवाल : इस्लाम में शख़्सिय्यात को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब : इस्लाम में शख़्सिय्यात को बुन्यादी अहम्मिय्यत ह़ासिल है। **अल्लाह** पाक जिसे नबी का मक़ामो मर्तबा दे तो उस की शख़्सिय्यत को मानना ज़रूरी है मसलन सरकारे आ़ली वक़ार

مدینہ

1 ...... بخاری، کتاب المظالم والغصب، باب اذا ھدم...الخ، ۲/۱۳۹، حدیث: ۲۴۸۲ ملخصاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शख़्सिय्यात को तस्लीम करना, इन पर ईमान लाना और **अल्लाह** पाक ने इन्हें जो मक़ामो मर्तबा, इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई उसे तस्लीम करना ज़रूरी है। नुबुव्वत का इन्कार करने के सबब बन्दा मुसल्मान नहीं रहता अगर्चे वोह लाख बार कलिमा पढ़े और एक नबी का इन्कार तमाम अम्बिया के इन्कार के बराबर है।

इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अपने बनाने से नहीं बनती

इसी त़रह़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी रब तआ़ला के मह़बूब और प्यारे बन्दे होते हैं लिहाज़ा इन की शख़्सिय्यात को तस्लीम करना और **अल्लाह** पाक ने इन्हें जो फ़ज़ीलतो शोहरत अ़ता फ़रमाई उसे मानना चाहिये। याद रखिये ! इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और शख़्सिय्यत अपने बनाने से नहीं बनती, येह **अल्लाह** पाक की अ़ता है जिसे चाहता है नवाज़ देता है। चुनान्चे पारह 3 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 26 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ **अल्लाह** !) तू जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है।

ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** तआ़ला जब किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को बुला कर फ़रमाता है कि मैं फ़ुलां से मह़ब्बत करता हूं तुम भी उस से मह़ब्बत करो चुनान्चे (ह़ज़रते सय्यिदुना) जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उस से मह़ब्बत करते और आस्मान में ए'लान करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां से मह़ब्बत करता है तुम भी उस से मह़ब्बत करो तो उस से आस्मान वाले मह़ब्बत करने लग जाते हैं, फिर उस के लिये ज़मीन में क़बूलिय्यत रख दी जाती है और जब रब तआ़ला किसी बन्दे से नाराज़ होता है तो फ़रमाता है कि मैं फ़ुलां से नाराज़ हूं तो तुम भी उस से नाराज़ हो जाओ, तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उस से नाराज़ हो जाते हैं, फिर आस्मान वालों में ए'लान करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां से नाराज़ है तुम भी उस से नाराज़ हो जाओ, वोह उस से नफ़रत करने लगते हैं, फिर ज़मीन में उस के लिये नफ़रत रख दी जाती है।[(1)]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत **अल्लाह** पाक के दस्ते क़ुदरत में है जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे। अगर **अल्लाह** पाक किसी के मुक़द्दर में ज़िल्लत कर दे तो वोह दुन्या की किसी त़ाक़त और मालो दौलत वग़ैरा के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त ह़ासिल नहीं कर सकता और अगर **अल्लाह** पाक किसी को इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और

مدینه

(1)......مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب اذا أحب...الخ، ص١٠٨٦، حديث:٢٧٠٥

शोहरत अ़ता फ़रमाए जैसा कि उस ने अपने महबूब बन्दों अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام को अ़ता फ़रमाई तो इसे कोई नहीं रोक सकता और न ही इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के मक़ामो मरातिब को कोई कम कर सकता है।

पर्दा फ़रमाने के बा वुजूद शोहरत में कमी नहीं आती

अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام की शानें तो बहुत बुलन्दो बाला हैं, उन के ग़ुलामों की भी येह शान है कि दुन्या से चले जाने और सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद भी उन की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत और शोहरत में कमी वाक़ेअ़ नहीं होती, लोगों के दिलों पर उन की हुक्मरानी बाक़ी रहती है। कहा जाता है कि एक अंग्रेज़ हिन्दूस्तान के दौरे पर आया। अजमेर शरीफ़ में जब उस ने सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेशवा, ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्तानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی के दरबारे नूरबार पर मख़्लूक़ का इज़्दिह़ाम देखा तो उस ने अपनी डायरी में अपने ज़ो'म के मुताबिक़ येह तअस्सुरात लिखे कि मैं ने अजमेर में एक अ़जीब बात देखी है कि एक मुर्दा लाखों अफ़राद पर हुकूमत कर रहा है।

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर
दुन्या से चले जाएं हुकूमत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश)

औलियाए किराम अपने मज़ारात में ज़िन्दा होते हैं

याद रखिये ! उस अंग्रेज़ ने अपने ज़ो'मे फ़ासिद (या'नी फ़ासिद गुमान) में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को **مَعَاذَ اللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ मुर्दा कहा जब कि इस्लामी नुक़्तए नज़र से औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام अपने मज़ारात में ज़िन्दा होते हैं जैसा कि शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला के औलिया इस दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ कूच कर गए हैं और अपने परवर्दगार के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है, वोह ख़ुशह़ाल हैं और लोगों को इस का शुऊ़र नहीं ।(1) इसी त़रह़ अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی फ़रमाते हैं : **فَلَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالَيْنِ وَلِذَا قِيْلَ أَوْلِيَاءُ اللّٰهِ لَا يَمُوْتُوْنَ وَلٰكِنْ يَّنْتَقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ إِلٰى دَارٍ** (अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और) औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की दोनों ह़ालतों (या'नी ज़िन्दगी और मौत) में कोई फ़र्क़ नहीं इसी लिये कहा गया है कि औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं ।(2)

कौन कहता है वली सब मर गए

क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए

---

(1) اشعۃُ اللمعات، کتاب الجہاد، باب حکم الاسراء، ۳/۴۲۳ کوئٹہ

(2) مرقاۃُ المفاتیح، کتاب الصلاۃ، الفصل الثالث، ۳/۴۵۹، تحت الحدیث: ۱۳۶۶ دار الفکر بیروت

मजालिस की कारकर्दगी

सुवाल : दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा और दीगर मजालिस की कारकर्दगी से आप किस ह़द तक मुत्मइन हैं ?

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्कज़ी मजलिसे शूरा और दीगर मजालिस शबो रोज़ बड़ी मेह़नत व जां फ़िशानी के साथ मदनी कामों में मसरूफ़े अ़मल हैं लेकिन जहां तक मुत्मइन होने का तअ़ल्लुक़ है तो मैं ख़ुद अपनी ज़ात से भी मुत्मइन नहीं हो पाता तो किसी और से कैसे मुत्मइन हो सकता हूं ! हमारा मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये अगर हम रोज़ाना दिन रात का सारा वक़्त भी सर्फ़ करें तब भी कम है मगर इन अवक़ात में से भी हमारा बहुत सा वक़्त खाने, पीने, सोने और दीगर बशरी अ़वारिज़ात व मा'मूलात में न चाहते हुए भी सर्फ़ हो जाता है, ऐसी सूरते ह़ाल में क्यूंकर मुत्मइन हो कर बैठा जा सकता है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखिये ! एक ताजिर जिस के पेशे नज़र फ़क़त़ दुन्या होती है वोह अपनी दुन्या बनाने की ख़ातिर कभी भी अपने कारोबार से मुत्मइन हो कर बैठ नहीं जाता, उसे मज़ीद बढ़ाने और उस में बेहतरी लाने की कोशिशें करता रहता है तो फिर हमें भी मुत्मइन हो कर बैठ जाने के

बजाए ज़ियादा से ज़ियादा मदनी काम बढ़ाने, दीने इस्लाम के पैग़ाम को दुन्या भर में पहुंचाने और अपनी क़ब्रो आख़िरत बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिये । मुत्मइन हो कर तो उसे बैठना चाहिये जिस ने कमा ह़क़्क़ुहू दीन का काम कर लिया हो जब हम कमा ह़क़्क़ुहू दीन का काम करने में काम्याब ही नहीं हुए तो फिर हमें ख़ुश फ़हमी का शिकार भी नहीं होना चाहिये । **हां !** हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** पाक का पैग़ाम और उस के अह़कामात कमा ह़क़्क़ुहू हम तक पहुंचाए हैं चुनान्चे ह़िज्जतुल विदाअ़ के मौक़अ़ पर ख़ुत़्बा देते हुए आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सामिईन से फ़रमाया : "तुम से **अल्लाह** पाक के यहां मेरे बारे में पूछा जाएगा तो तुम लोग क्या जवाब दोगे ?" तमाम सामिईन ने कहा : हम लोग **अल्लाह** पाक से कह देंगे कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** पाक का पैग़ाम पहुंचा दिया और रिसालत का ह़क़ अदा कर दिया । येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाई[1] और

1..... उंगली को आस्मान की त़रफ़ उठा कर **अल्लाह** पाक को लोगों पर गवाह बनाना है न येह कि **अल्लाह** पाक आस्मान में है क्यूं कि **अल्लाह** पाक मकान में होने से पाक है । इस मस्अले की मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" के सफ़ह़ा 100 ता 115 का मुत़ालआ़ कीजिये । (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

तीन बार कहा : ''اَللّٰھُمَّ اشْھَدْ'' ऐ **अल्लाह** ! तू गवाह रहना ।''[1] ऐन इसी हालत में जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत्बे में अपना फ़र्ज़े रिसालत अदा फ़रमा रहे थे येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ؕ (پ۶، المائدۃ: ۳)[2]

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! या आ़शिक़ाने रसूल कहना कैसा ?

सुवाल : दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में दर्सो बयान के दौरान लोगों को मुख़ातब करने के लिये ''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो'' या ''आ़शिक़ाने रसूल'' कहा जाता है, क्या येह ह़दीस से साबित है ?

जवाब : किसी चीज़ के जाइज़ होने का मे'यार फ़क़त येह नहीं कि वोह क़ुरआन व ह़दीस से साबित हो या हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उसे किया हो या उस का हुक्म दिया हो बल्कि जाइज़ होने का मे'यार

---

1 ..... ابوداود، کتاب المناسک، باب صفۃ حجۃ النبی ﷺ، ۲/۲۶۹، حدیث: ۱۹۰۵ ملتقطاً دار احیاء التراث العربی بیروت

2 ..... مدارج النبوت، ۲/۳۹۴ مرکز اہل سنت برکات رضا ھند

www.dawateislami.net

येह है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने उस से मन्अ़ न किया हो लिहाज़ा हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का किसी काम को करना या उस का हुक्म देना उस काम के जाइज़ होने की दलील तो हो सकता है मगर उन का किसी काम को न करना उस काम के ना जाइज़ होने की दलील क़त़्अ़न नहीं बन सकता। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है कि ﴿وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ﴾ (پ۲۸، الحشر:۷) "जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो।" येह नहीं फ़रमाया कि "مَا فَعَلَ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا لَمْ يَفْعَلْ فَانْتَهُوْا रसूल जो करे करो और जो न करे उस से बचो।"(1)

शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : اَلْفِعْلُ يَدُلُّ عَلَى الْجَوَازِ وَعَدَمُ الْفِعْلِ لَا يَدُلُّ عَلَى الْمَنْعِ या'नी किसी काम का करना उस के जाइज़ होने की दलील है मगर किसी काम का न करना उस के मन्अ़ होने की दलील नहीं।(2) शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : نَکَرْدَنْ چِیْزِ دِیْگَرْ سْت وَ مَنْع فَرْمُوْدَنْ چِیْزِ دِیْگَر या'नी न करना और चीज़ है और मन्अ़ करना और चीज़ है।(3)

مدینہ

1...... फ़तावा रज़विय्या, 8/551, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2...... مواهب اللدنیه، ذکر طبه ﷺ بقطع العروق والکی، ۳/۵۴ دار الکتب العلمیة بیروت

3...... تحفه اثنا عشریه، باب دهم مطاعن ابوبکر رضی الله عنه، ص ۲۶۹ ملخصاً دهلی

मोमिन मीठा है, मीठे को पसन्द करता है

''**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो**'' कहने से शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने कहीं भी मन्अ़ नहीं किया लिहाज़ा येह कहना जाइज़ है। अगर ख़ास ''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो'' के अल्फ़ाज़ के सुबूत ही की बात है तो याद रखिये कि येह उर्दू ज़बान के अल्फ़ाज़ हैं जब कि अह़ादीसे मुबारका अ़रबी में हैं तो येह ह़दीस से किस त़रह़ साबित हो सकते हैं ! लिहाज़ा इस त़रह़ का सुबूत चाहना जहालत व ह़माक़त है, इस त़रह़ तो फ़क़त़ ''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो'' क्या सारी उर्दू ज़बान बोलना भी ह़दीस से साबित नहीं। अगर ख़ास इन अल्फ़ाज़ का सुबूत मक़्सूद नहीं बल्कि मुसल्मानों को मीठा मीठा कहने के सुबूत की बात है तो येह ह़दीसे पाक से साबित है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन मीठा है, मीठे को पसन्द करता है और जिस ने मीठे को अपने ऊपर ह़राम किया तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की, **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत और पाकीज़ा चीज़ों को अपने ऊपर ह़राम मत ठहराओ, खाओ पियो और शुक्र अदा करो, पस अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला की सज़ा लाज़िम होगी।[1]

---

1 ..... فردوس الأخبار، باب الميم، ذكر الفصول من أدوات الالف واللام، ۲/۳۵۱، حديث: ۶۸۳۴ دار الفكر بيروت

बहर ह़ाल मुसल्मानों को मुख़ात़ब करने के लिये ''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो'' या ''आ़शिक़ाने रसूल'' कहने में कोई ह़रज नहीं, इस क़िस्म के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ हमारे मुआ़शरे में मौक़अ़ की मुनासबत से मह़ब्बत व अपनाइय्यत के इज़्हार के लिये बोले जाते हैं, मसलन बच्चा जब मां का दिल ख़ुश करता है तो मां उसे ''मेरा लाल'', ''मेरा मिठ्ठू'' वग़ैरा अल्फ़ाज़ बोल कर अपनी मह़ब्बत का इज़्हार करती है। इसी त़रह़ दा'वते इस्लामी वाले भी दर्सो बयान के दौरान मौक़अ़ की मुनासबत से मुसल्मानों से अपनी मह़ब्बत व उल्फ़त और अपनाइय्यत का इज़्हार करते हुए उन्हें ''मीठे मीठे इस्लामी भाइयो'' बोल कर मुख़ात़ब करते हैं।

जिन कामों की मुमानअ़त न हो वोह जाइज़ हैं

सुवाल : क्या हर हर काम के जाइज़ होने के लिये क़ुरआन व ह़दीस में उस की सराह़त मौजूद होना भी ज़रूरी है ?

जवाब : जिन कामों से शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने मन्अ़ नहीं किया वोह जाइज़ हैं अगर्चे क़ुरआन व ह़दीस में उन के जाइज़ होने की सराह़त मौजूद न हो। हज़ारों काम ऐसे हैं जिन्हें मुसल्मान करते हैं ह़ालां कि क़ुरआन व ह़दीस में उन का वाज़ेह़ ज़िक्र नहीं मिलता, मसलन अज़ान व बयान के लिये बल्कि मुकब्बिरीन (या'नी दौराने नमाज़ तक्बीर कहने वालों) को छोड़ कर दौराने नमाज़ लाउड स्पीकर का इस्ति'माल, मस्जिद में इमाम के लिये त़ाक़

नुमा मेह़राब बनाना, मसाजिद पर गुम्बद व मीनार बनाना, ईमाने मुफ़स्सल, ईमाने मुज्मल, छे[6] कलिमे, क़ुरआने पाक के तीस पारे बनाना, ए'राब लगाना, रुकूअ़ बनाना, नुक़्ते़ लगाना, अह़ादीसे मुबारका को किताबी शक्ल देना, इन की अक़्साम बनाना मसलन सह़ीह़, ह़सन, ज़ई़फ़ और मौज़ूअ़ वग़ैरा बल्कि ख़ुद बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरा अह़ादीस की कुतुब का मुदव्वन (या'नी जम्अ़) होना, मदारिस का क़ियाम, मुरव्वजा ता'लीमी निसाब का इन्तिख़ाब, ज़कात व फ़ित़रा राइजुल वक़्त सिक्के बल्कि बा तस्वीर नोटों से अदा करना, ऊंटों वग़ैरा के बजाए हवाई जहाज़ के ज़रीए़ सफ़रे ह़ज करना वग़ैरा वग़ैरा येह सब ऐसे काम हैं जिन का क़ुरआन व ह़दीस में न कोई ज़िक्र है और न ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक दौर में येह काम थे लेकिन अब हर एक इन को मानता है।

अश्या में अस्ल इबाह़त (या'नी जाइज़ होना) है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : अश्या में अस्ल इबाह़त (या'नी जाइज़ होना) है।[1] लिहाज़ा ऐसे उमूर जिन से शरीअ़त ने मन्अ़ नहीं किया वोह जाइज़ व मुबाह़ बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के सबब मुस्तह़ब के दरजे में हैं क्यूं कि मुसल्मान उन्हें अच्छा समझ कर करते हैं और

1 ..... مرقاۃ المفاتیح، کتاب الایمان، الفصل الثالث، ۱/۴۴۴، تحت الحدیث: ۱۹۷ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

ह़दीसे पाक में है : वोह चीज़ जिस को मुसल्मान (अहले इ़ल्म व अहले तक़्वा) अच्छा समझें वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी अच्छी है ।[1] जो इन उमूर में से किसी चीज़ को ह़राम या मक्रूह कह कर मन्अ़ करे तो उस पर लाज़िम है कि वोह उस के ह़राम या मक्रूह होने पर दलील लाए और दिखाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहां इन से मन्अ़ किया है ।

ह़ैरत की बात येह है कि मा'मूलाते अहले सुन्नत मसलन ग्यारहवीं शरीफ़, मीलाद और जुलूसे मीलाद वग़ैरा की अस्ल साबित होने के बा वुजूद इन के जवाज़ का मुत़ालबा करने वाले ख़ुद हज़ारों काम, जल्से, जुलूस, अय्यामे सह़ाबा, दर्से निज़ामी, मसाजिद में मनारे की ता'मीर वग़ैरा बिग़ैर किसी सुबूत और दलील के करते हैं ।

नेक कामों को एह़तियात़न छोड़ना और उन से रोकना कैसा ?

सुवाल : वोह काम जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नहीं किये उन्हें एह़तियात़न छोड़ देना और लोगों को भी उन से रोकना कैसा है ?

जवाब : वोह नेक और अच्छे काम जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने नहीं किये और न ही उन के मुबारक दौर में वोह थे मगर अब मुसल्मानों में राइज हैं और शरीअ़त ने उन से मन्अ़ भी नहीं

1 ..... معجم اوسط، باب الزای، من اسمہ زکریا، ۲/۳۸۴، حدیث: ۳۶۰۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

किया तो वोह मुबाह़ (या'नी जाइज़) हैं। शैत़ान के वसाविस में आ कर उन्हें छोड़ देना और ह़राम या मक्रूह कह कर मुसल्मानों को उन से रोकने की कोशिश करना येह एह़तियात़ नहीं बल्कि कुरआने करीम में इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इफ़्तिरा (झूट) बांधना फ़रमाया गया है। चुनान्चे खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

(پ۱۴، النحل:۱۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं येह ह़लाल है और येह ह़राम है कि **अल्लाह** पर झूट बांधो बेशक जो **अल्लाह** पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा।

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : आज कल भी जो लोग अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम बता देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की शीरीनी, फ़ातिह़ा, ग्यारहवीं, उ़र्स वग़ैरा ईसाले सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअ़त में वारिद नहीं हुई उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्बत येह कह देना कि येह शरअ़न ह़राम हैं **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तिरा करना (झूट बांधना) है।

आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : येह कुछ एह़तियात़ नहीं है कि किसी चीज़ को ह़राम या मक्रूह कह कर ख़ुदा पर इफ़्तिरा कर दो (झूट बांधो) क्यूं कि ह़ुरमत व कराहत के लिये दलील दरकार है बल्कि एह़तियात़ इस में है कि उसे मुबाह़ (या'नी जाइज़) माना जाए कि येही अश्या में अस्ल है ।[1]

हर बिद्अ़त बुरी नहीं होती

रही बात कि ह़दीसे पाक में है : كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّكُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّار या'नी हर बिद्अ़त (या'नी नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है ।[2] तो इस ह़दीस शरीफ़ का जवाब येह है कि ह़दीसे पाक ह़क़ है । यहां बिद्अ़त से मुराद बिद्अ़ते सय्यिआ या'नी बुरी बिद्अ़त है और यक़ीनन हर वोह बिद्अ़त बुरी है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़त उसूल और क़वाइ़दे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़तो सुन्नत से नहीं टकराती) उस को बिद्अ़ते ह़सना कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़त गुमराही कहलाती है ।[3]

---

1 ..... ردالمحتار، کتاب الأشربة، ۱۰/ ۵۰ دار المعرفة بیروت

2 ..... نسائی، کتاب صلاة العیدین، کیف الخطبة، ص ۲۷۴، حدیث: ۱۵۷۵ دار الکتب العلمیة بیروت

3 ..... أشعة اللّمعات، ۱/ ۱۳۵

सोह़बत अच्छी हो या बुरी ज़रूर रंग लाती है

सुवाल : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आने की बरकत से मेरा येह ज़ेह्न बना है कि मैं बुरे दोस्तों की सोह़बत से दूर रहूं मगर इतनी पुरानी दोस्ती यक दम कैसे ख़त्म की जाए ?

जवाब : सोह़बत का बड़ा असर होता है, सोह़बत चाहे अच्छी हो या बुरी ज़रूर रंग लाती है, इस लिये अच्छी सोह़बत अपनाना और बुरी सोह़बत से ख़ुद को बचाना इन्तिहाई ज़रूरी है । मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अच्छे और बुरे साथी की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी धोंकने वाले की त़रह़ है, मुश्क उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी धोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी ।[1] लिहाज़ा बुरे दोस्तों की सोह़बत से इज्तिनाब करते हुए अच्छे दोस्तों की सोह़बत का इन्तिख़ाब करना चाहिये । ह़दीसे पाक में अच्छे दोस्त की पहचान भी बयान फ़रमाई गई है । चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्त वर है : अच्छा हम नशीन वोह है कि उस के देखने से तुम्हें ख़ुदा याद आए और उस की गुफ़्तगू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए ।[2]

---

1 ..... مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب استحباب... الخ، ص ۱۰۸۴، حدیث: ۶۶۹۲

2 ..... جامع صغیر، حرف الخاء، ص ۲۴۷، حدیث: ۴۰۶۳ دار الکتب العلمیة بیروت

बुरे दोस्तों से कनारा कशी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ख़ूब नेकियां करने, गुनाहों से बचने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन पाने के लिये हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये। अगर मदनी माहोल में आने से पहले किसी का उठना बैठना बुरे दोस्तों के साथ था तो अब तर्क कर दीजिये। हां ! अगर आप असरो रुसूख़ वाले हैं और आप की बात आप के दोस्तों में सुनी और मानी जाती है तो फिर आप हिक्मते अ़मली और नरमी के साथ अपने दोस्तों को भी मदनी माहोल से वाबस्ता करने की कोशिश कीजिये अगर ऐसा नहीं तो फिर अ़लाहदगी ही में आ़फ़िय्यत है कि कहीं ऐसा न हो कि आप उन्हें मदनी माहोल से वाबस्ता करने जाएं और ख़ुद उन के रंग में रंग जाएं। उ़मूमन देखा गया है कि मदनी माहोल में ए'तिकाफ़ करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने, दाढ़ी रखने, इमामा शरीफ़ सजाने और ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्के़ मुस्त़फ़ा में आंसू बहाने वाले जब बुरे दोस्तों के पास बैठने लगते हैं तो आहिस्ता आहिस्ता फिर से बद अ़मली का शिकार हो कर मदनी माहोल से दूर हो जाते हैं लिहाज़ा बुरे दोस्तों से कनारा कशी लाज़िमी है। मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَيُّوْم फ़रमाते हैं :

تاتُوانی دُور شَو اَز یارِ بد
یارِ بد بدتر بُوَد اَز مارِ بد
مارِ بد تنہا ہمیں بَرجاں زَنَد
یارِ بد برجان و بَر ایماں زَنَد (1)

या'नी जब तक मुम्किन हो बुरे साथी से दूर रहो कि बुरा साथी बुरे सांप से भी ज़ियादा ख़त़रनाक और नुक़्सान देह है, क्यूं कि ख़त़रनाक सांप तो सिर्फ़ जान या'नी जिस्म को तक्लीफ़ या नुक़्सान पहुंचाता है जब कि बुरा साथी जान और ईमान दोनों को बरबाद कर देता है। **क़ुरआन** व ह़दीस में ऐसे लोगों की सोह़बत और दोस्ती से बचने का हुक्म है। पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 68 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीराते अह़मदिय्यह** में है : यहां ज़ालिमीन से मुराद मुब्तदिईन (या'नी गुमराह व बद दीन), फ़ासिक़ीन और काफ़िरीन हैं।(2) ह़दीसे पाक में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : आदमी अपने साथी के दीन पर होता है, पस ख़याल रखो कि तुम

مدینہ

1 ..... گلدستہ مثنوی، ص ۹۴
2 ..... تفسیراتِ اَحمدیۃ، پ ۷، الأنعام، تحت الآیۃ: ۶۸، ص ۳۸۸ پشاور

किस को अपना दोस्त बना रहे हो ।[1] सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की मुबारक ज़िन्दगियां ज़िन्दगी के हर शो'बे में हमारे लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह हैं, हमें चाहिये कि इन नुफ़ूसे कुदसिय्या के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें ।

अमीरे अहले सुन्नत की इन्फ़िरादी कोशिश

सुवाल : दा'वते इस्लामी के अवाइल में आप किस त़रह़ इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाते थे ?

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने मज़्हबी घराने में आंख खोली, बचपन ही से नमाज़ पढ़ने और दोस्तों को दा'वत दे कर मस्जिद साथ ले जाने का मा'मूल था, फिर जब दा'वते इस्लामी का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो एक एक पर इन्फ़िरादी कोशिश के लिये घरों, दुकानों और कारख़ानों में पहुंच जाता था । इन्फ़िरादी कोशिश की ऐसी धुन थी कि गाड़ी न मिलने की सूरत में भी मीलों मील पैदल सफ़र करता, इस क़दर मेह़नतो कोशिश करने के बा वुजूद कभी तो मुराद बर आती और कभी नाकामी का मुंह भी देखना पड़ता लेकिन मायूस होने के बजाए इस्तिक़ामत के साथ इन्फ़िरादी कोशिश में मसरूफ़ रहता । आज اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा दा'वते इस्लामी की सूरत में मौजूद है ।

مدینہ

1 ......ترمذی، کتاب الزھد، باب(ت: ۴۵) ۴/۱۶۷، حدیث: ۲۳۸۵ دار الفکر بیروت

इन्फ़िरादी कोशिश का यादगार वाक़िआ़

सुवाल : अपनी इन्फ़िरादी कोशिश का कोई यादगार वाक़िआ़ इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : दा'वते इस्लामी के अवाइल में इन्फ़िरादी कोशिश के कई यादगार वाक़िआ़त हैं उन में से एक वाक़िआ़ बतौ़रे तरग़ीब आप की ख़िदमत में पेश करता हूं चुनान्चे जिन दिनों मैं नूर मस्जिद में इमामत किया करता था, दा'वते इस्लामी के क़ियाम को अभी ज़ियादा अ़र्सा भी न गुज़रा था कि एक दाढ़ी मुन्डा (Shaved) नौ जवान किसी ग़लत़ फ़हमी की बिना पर मुझ से नाराज़ हो गया यहां तक कि उस ने मेरे पीछे नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दी । एक बार मैं कहीं से गुज़र रहा था हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से वोही नौ जवान अपने दोस्त समेत मेरे सामने आ गया, मैं ने मौक़अ़ को ग़नीमत जानते हुए सलाम में पहल करते हुए ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ'' कहा तो उस ने नाराज़गी के अन्दाज़ में मुंह नीचे कर लिया और सलाम का जवाब तक न दिया, मैं ने मज़ीद इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उस का नाम ले कर येह कहते हुए कि आप तो बहुत नाराज़ हैं उसे अपने साथ चिमटा लिया । इस से वोह ज़रा खुला और उस के ज़ेह्न में जो वसाविस थे वोह कहने शुरूअ़ कर दिये, मैं ने ह़िक्मते अ़मली और नरमी के साथ उन के जवाबात अ़र्ज़ किये । फिर वोह दोनों दोस्त वहां से रुख़्सत हो गए ।

जब दोबारा उस नाराज़ नौ जवान के दोस्त से मेरी मुलाक़ात हुई तो उस ने मुझे बताया कि वोह येह कह रहा था : इल्यास तो अ़जीब आदमी है कि उस ने मुझे सलाम में पहल की, जब मैं ने नाराज़ हो कर मुंह नीचे कर लिया तो उस ने जज़्बात में आ कर मुंह फुला लेने के बजाए मुझे अपने सीने से लगा लिया और फिर प्यार से ऐसा दबोचा कि मेरे सीने से उस की नफ़रत यक दम निकल गई और महब्बत दाख़िल हो गई ! बस अब मुरीद बनूंगा तो इसी का बनूंगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मेरे ज़रीए़ सिल्सिलए क़ादिरिय्या में दाख़िल हो कर एक दम मुहिब बन गया और उस ने अपने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक भी सजा ली ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुराई को भलाई से टालते हुए हिक्मते अ़मली और नरमी के साथ हर एक पर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखिये कि इन्फ़िरादी कोशिश ज़रूर रंग लाती है, इस के ज़रीए़ रूठे हुओं को मनाया और दुश्मनों को भी दोस्त बनाया जा सकता है । क़ुरआने मजीद में बुराई को भलाई से टालने का हुक्म देते हुए ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾ (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ: ۳۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी, ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त ।

हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़क़्बा ! जो तुम से नाता तोड़े तुम उस से जोड़ो, जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ करो ।[1]

रोज़ाना दो घन्टे मदनी काम

सुवाल : दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकत से मेरा येह ज़ेह्न बना है कि मैं रोज़ाना दो घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ करूं, येह इर्शाद फ़रमाइये कि येह दो घन्टे किस काम में सर्फ़ किये जाएं ?

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बहुत सारे मदनी काम हैं जैसे ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी काम । इन में से बा'ज़ मदनी काम रोज़ाना, बा'ज़ हफ़्ते में एक बार और बा'ज़ महीने में एक बार किये जाते हैं । रोज़ाना के पांच मदनी काम येह हैं : (1) सदाए मदीना (2) मदनी ह़ल्क़ा (3) मस्जिद दर्स (4) चोकदर्स (5) मद्रसतुल मदीना बालिग़ान । हफ़्तावार पांच मदनी कामों में : (1) हफ़्तावार इज्तिमाअ़ (2) मस्जिद इज्तिमाअ़/हफ़्तावार इज्तिमाई मदनी मुज़ाकरा (3) केसिट/वीसीडी इज्तिमाअ़ (4) यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ (5) मदनी दौरा शामिल हैं जब कि माहाना दो मदनी काम : (1) मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करना और (2) मदनी

مدینہ

1 ..... مسند امام احمد، مسند الشامیین، حدیث عقبة بن عامر الجهنی، ۶/۱۴۸، حدیث: ۱۷۴۵۷، دار الفکر بیروت

इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाना है ।[1] रोज़ाना के मदनी कामों में से एक मदनी काम दर्स देना या सुनना है, रोज़ाना वक़्ते मुक़र्ररा पर एक दर्स घर में और एक दर्स मस्जिद या चोक वग़ैरा में जहां सहूलत हो दीजिये, अगर दर्स देना नहीं आता तो दर्स में शिर्कत कीजिये । इसी त़रह़ मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान भी रोज़ाना किये जाने वाले मदनी कामों में से एक मदनी काम है, इस में शिर्कत फ़रमा कर दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ना सीख लीजिये, अगर आप दुरुस्त म़ख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम पढ़ना जानते हैं तो दूसरों को सिखा कर क़ुरआने मजीद की ता'लीम को आ़म कीजिये ।[2]

हफ़्तावार किये जाने वाले मदनी कामों में से एक मदनी काम सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करना और इस की दा'वत आ़म करना है लिहाज़ा इस इज्तिमाअ़ में ख़ुद भी शिर्कत कीजिये और इस की दा'वत आ़म कर के इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी अपने साथ ले जाने की कोशिश कीजिये । यूं ही हफ़्ते में एक दिन मदनी दौरा और बरोज़ हफ़्ता बा'द नमाज़े इ़शा इज्तिमाई मदनी मुज़ाकरे का एहतिमाम होता

1..... मुल्क या बैरूने मुल्क में मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तह़्त ह़स्बे ज़रूरत तरमीम हो सकती है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

2..... मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ाने से पहले मजलिसे मद्रसतुल मदीना को टेस्ट देना लाज़िम है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

है इस में शिर्कत कीजिये ।[1] जहां येह मदनी काम न होते हों वहां ज़िम्मादारान इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर इन कामों को शुरूअ़ करने में उन का साथ दीजिये । इसी त़रह़ माहाना मदनी कामों में से एक मदनी काम सुन्नतों की तरबियत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र करना भी है आप भी हिम्मत कीजिये और मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप के अ़लाक़े में मदनी कामों की धूमें मच जाएंगी ।

इन्फ़िरादी कोशिश को हिर्ज़े जां बना लीजिये कि येह तमाम मदनी कामों और बिल ख़ुसूस मदनी क़ाफ़िलों की रूह़ है लिहाज़ा नए और वोह पुराने इस्लामी भाई जो पहले आते थे मगर अब नहीं आते उन्हें तलाश कर के फिर से मदनी माह़ोल से वाबस्ता करने की कोशिश कीजिये अलबत्ता जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी है उन्हें अपने ह़ाल पर छोड़ दीजिये । दा'वते इस्लामी के इन मदनी कामों में अपने दो घन्टे सर्फ़ किये जा सकते हैं, येह दो घन्टे तो बहुत कम हैं ह़क़ीक़त तो येह है कि अगर हम अपना सारा वक़्त बल्कि दीने इस्लाम की ख़ातिर अपनी जान भी क़ुरबान कर दें तब भी ह़क़ अदा नहीं हो सकता ।

जान दी, दी हुई उसी की थी

ह़क़ तो येह है कि ह़क़ अदा न हुवा

---

1 ..... ममालिक के अवक़ात की तब्दीली की वज्ह से मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं । (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

मदनी कामों को कैसे वक़्त दिया जाए ?

सुवाल : दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बरकत से मेरा येह ज़ेह्न बना है कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' येह इर्शाद फ़रमाइये कि अपना ज़ाती कारोबार होते हुए दा'वते इस्लामी के मदनी कामों को कैसे वक़्त दिया जाए ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के कई ऐसे मदनी काम हैं जिन्हें कारोबारी मसरूफ़ियात होने के बा वुजूद भी ब आसानी किया जा सकता है मसलन पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये जब मस्जिद जाएं तो नमाज़ की दा'वत देते हुए कम अज़ कम एक को अपने साथ लेते जाइये। नमाज़े फ़ज्र के लिये जब घर से निकलें तो सदाए मदीना लगाते जाइये, फिर नमाज़ के बा'द सुब्ह़ के मदनी ह़ल्क़े में आप ब आसानी शिर्कत कर सकते हैं क्यूं कि उ़मूमन येह वक़्त कारोबार का नहीं होता। दिन में जब फ़ारिग़ वक़्त मिले तो उस वक़्त अपनी दुकान या बाज़ार में जहां सहूलत हो वहां चोकदर्स की तरकीब बनाइये। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल भी लोगों की इस्लाह़ का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं इन्हें पढ़ और सुन कर न जाने कितने लोगों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब आ चुका है लिहाज़ा इन्हें ह़स्बे तौफ़ीक़ अपनी दुकान पर रख लीजिये और जो भी गाहक आए उसे एक रिसाला भी दे

दीजिये तो यूं नेकी की दा'वत भी आ़म होगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को भी इस की ख़ूब बरकतें नसीब होंगी ।

इस के इ़लावा इन्फ़िरादी कोशिश एक ऐसा मदनी काम है जिसे आप चलते फिरते, दुकान, मह़ल्ले, बाज़ार अल ग़रज़ हर जगह कर सकते हैं । ऐसे ही अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ नेक बनने का नुस्ख़ा मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तरबियत के लिये हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के साथ साथ सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये भी कोशिश जारी रहेगी ।

मदनी क़ाफ़िलों को ज़ियादा अहम्मिय्यत देने की वज्ह

सुवाल : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में दीगर मदनी कामों के मुक़ाबले में मदनी क़ाफ़िलों को ज़ियादा अहम्मिय्यत क्यूं दी जाती है ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में मदनी क़ाफ़िलों को ज़ियादा अहम्मिय्यत देने की एक वज्ह तो येह है कि मदनी क़ाफ़िले दीगर कई मदनी कामों मसलन सदाए मदीना, मदनी ह़ल्क़ा, दो दर्स, फ़िक्रे मदीना, मदनी दौरा, इन्फ़िरादी कोशिश और मदनी

इन्आ़मात वग़ैरा वग़ैरा का मज्मूआ़ हैं। मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले इस्लामी भाई इन तमाम मदनी कामों को बजा लाते हैं क्यूं कि येह सब मदनी काम मदनी क़ाफ़िले के जद्वल का हिस्सा हैं। गोया मदनी कामों का समुन्दर मदनी क़ाफ़िले के कूज़े में बन्द है। यूं समझिये कि जिस त़रह़ बा'ज़ गोलियों (Tablets) में विटामिन ए (Vitamin A), बा'ज़ में विटामिन बी (Vitamin B) और बा'ज़ में विटामिन सी (Vitamin C) होता है लेकिन मल्टी विटामिन (Multi Vitamins) में येह सब विटामिन्ज़ (Vitamins) शामिल होते हैं ऐसे ही मदनी क़ाफ़िले मल्टी विटामिन की ह़ैसिय्यत रखते हैं इन में दीगर कई मदनी काम शामि हैं।

दूसरी वज्ह येह है कि दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करना है'' इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद के ह़ुसूल का बेहतरीन ज़रीआ़ मदनी क़ाफ़िले ही हैं। आज जो दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम पहुंचा हुवा है येह मदनी क़ाफ़िलों ही की बरकतें हैं लिहाज़ा हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में यक मुश्त एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार करूंगा।

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	जिन कामों की मुमानअ़त न हो वोह जाइज़ हैं	18
ईद और जुमुआ़ का इज्तिमाअ़ बाइ़से बरकत है	2	अश्या में अस्ल इबाह़त (या'नी जाइज़ होना) है	19
ओ़हदे या ज़िम्मादारी के लिये इन्तिख़ाब का मे'यार	4	नेक कामों को एह़तियात़न छोड़ना और उन से रोकना कैसा ?	20
शख़्सिय्यात को बदनाम करने की नाकाम कोशिशें	6	हर बिद्अ़त बुरी नहीं होती	22
शख़्सिय्यात की अहम्मिय्यत	8	सोह़बत अच्छी हो या बुरी ज़रूर रंग लाती है	23
इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अपने बनाने से नहीं बनती	9	बुरे दोस्तों से कनारा कशी	24
पर्दा फ़रमाने के बा वुजूद शोहरत में कमी नहीं आती	11	अमीरे अहले सुन्नत की इन्फ़िरादी कोशिश	26
औलियाए किराम अपने मज़ारात में ज़िन्दा होते हैं	12	इन्फ़िरादी कोशिश का यादगार वाक़िआ़	27
मजालिस की कारकर्दगी	13	रोज़ाना दो घन्टे मदनी काम	29
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! या आ़शिक़ाने रसूल कहना कैसा ?	15	मदनी कामों को कैसे वक़्त दिया जाए ?	32
मोमिन मीठा है, मीठे को पसन्द करता है	17	मदनी क़ाफ़िलों को ज़ियादा अहम्मिय्यत देने की वज्ह	33

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये **"मदनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

M.R.P. ₹ 00/-

01082123

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net